बीसवीं शताब्दी में स्थापित एक संवत् : तारक

राजीव कुमार 'त्रिगर्ती' *

09418193024

शोधसार

संवत्‌ओं का एक बहुत प्राचीन और विस्तृत इतिहास है। संवत्‌ओं के मूल में कालगणना ही है अर्थात् काल के सम्यक् परिगणन हेतु संवत् की आवश्यकता पड़ती है। विश्व में संवत्‌ओं के प्रचलन की परम्परा प्राचीन काल से ही दृष्टिगत होती है। अधिकांश संवत्‌ शक्तिशाली राजाओं के द्वारा प्रचलित हुए। जिनके मूल में उनके पराक्रम के यशोगान का प्रचार ही था। अनेक संवत् महान् व्यक्तियों के जीवन से जुड़ी कुछ विशिष्ट घटनाओं या कार्यों से सम्बन्ध रखते हैं।

भारत में भी संवत्‌ओं को प्रचलित करने की परम्परा सर्वत्र पर्याप्त मात्रा में दृष्टिगत होती है। अधिकांश संवत्‌ओं की स्थापना राजाओं द्वारा अपनी किसी विजय या राज्यारोहण की स्मृति में की गई। अतः बहुत से संवत्‌ओं में यह समझना भी कठिन है कि इन्हें किसने और कब प्रारम्भ किया। कोई भी संवत् किसी समय पूरे भारतवर्ष में प्रचलित रहा हो इसका कोई प्रमाण उपलब्ध नहीं है।

उत्तरी भारत में आज भी विक्रमी संवत् और शक संवत् अधिक प्रचलित हैं। विक्रमी संवत् ई०पू० 58-571 में प्रारम्भ माना जाता है परन्तु इतिहास में ई०पू० प्रथम शताब्दी के उत्तरार्ध में उत्तर भारत में किसी भी पराक्रमी राजा का उल्लेख प्राप्त नहीं होता। इस समय मध्य एशिया से आए शकों पर मालवों ने विजय प्राप्त की थी।

शक संवत्² का प्रारम्भ 78 ई० माना जाता है। साधारणतया कुषाण शासक कनिष्क प्रथम को ही इस शक अथवा शकाब्द इस संवत् का प्रवर्तक माना जाता है। यह व्यवहृत समस्त भारतीय संवत्‌ओं में अत्यधिक प्रसिद्ध व प्रचलित रहा, यह तो नहीं कहा जा सकता परन्तु भारतीय गणतन्त्र में इसे राष्ट्रीय संवत् के रूप में स्वीकार किया गया है।

इसके अतिरिक्त भारत में समय-समय पर प्रचलित रहे कुछ संवत्‌ओं का प्रारम्भ तथा उनके प्रारम्भ के कारणों पर भी दृष्टिपात किया जा सकता है³ - कलियुग अथवा ई०पू० 3102 से

* गॉवः लंघू, डाकघरः गौंधीग्राम, जिलाः कौंगड़ा, हि०प्र० – 176125।

1. भारतीय इतिहास कोश (विक्रमादित्य) पृष्ठ-431।
2. भारतीय इतिहास कोश (शकसंवत्) पृष्ठ-444।
3. भारतीय इतिहास कोश (संवत्) पृष्ठ-458-459।

प्रारम्भ इस प्रागैतिहासिक संवत् का प्रयोग केवल प्राचीन साहित्य में मिलता है। आनन्द विक्रम संवत् 33 ई० में किसी अज्ञात शासक के द्वारा प्रारम्भ किया गया। लिच्छवि संवत् का प्रवर्तन 111ई० में किसी अज्ञात व्यक्ति के द्वारा ही किया गया। चेदि अथवा त्रकूटक कलचुरि संवत् 248 ई० में प्रारम्भ हुआ। गुप्त-वंश के संस्थापक चन्द्रगुप्त प्रथम ने अपने राज्यारोहण के समय 319-20ई० में गुप्त संवत् की स्थापना की। तोरमाण ने हूण संवत् सन् 448ई० में प्रारम्भ किया। हर्षवर्धन ने अपने राज्याभिषेक की स्मृति में 606ई० में हर्ष संवत् की स्थापना की। चेर अथवा केरल के राजाओं ने कालम् अथवा मालावार संवत् का आरम्भ 824ई० में किया। नेपाली (नेवारी) संवत् का आरम्भ 579ई० से माना जाता है। चालुक्य नरेश विक्रमांक के द्वारा अपने राज्याभिषेक की स्मृति में 1076ई० में विक्रमांक चालुक्य संवत् की स्थापना की गई। बंगाल के राजा लक्ष्मणसेन ने 1190ई० में लक्ष्मण संवत् प्रचलित किया।

इनके अतिरिक्त भी भारत में युधिष्ठिर संवत्, बौद्ध संवत्, तीर्थकर भगवान महावीर के निर्वाण कार्तिक शुक्ल से प्रारम्भ वीर संवत्, वल्लभि संवत्, कौल्लम् संवत्, गुजरात में राजा सिंहराज जयसिंह द्वारा प्रचलित सिंह सुवत्, श्रीहर्ष संवत्, शिवा संवत् (शिवाजी के राज्याभिषेक से), अमली (कटकी) संवत्, विलायती संवत् (बंगाल, उड़ीसा में प्रयुक्त), श्रीमद्दयानन्द संवत् आदि अनेक संवत् समय-समय पर प्रचलित हुए। भारत में प्रचलित इनमें से अधिकांश संवत्ओं का प्रचलन राजाओं के द्वारा ही किया गया या राजाओं से ही संबन्धित रहा। बहुत से संवत्ओं के सम्बन्ध में तो शिलालेखों और ताम्रपत्रों में उल्लेख से ही जाना जा सकता है।

इस्लाम में प्रचलित हिज्री संवत् का आरम्भ मुहम्मद साहब की हिजरत (प्रवास) के अवसर पर 622ई० में हुआ। जब वे मक्का छोड़कर मदीना जा बसे। यह चान्द्र वर्ष पर आधारित है।⁴ ईस्वी सन् ईशु-मसीह से सम्बन्ध रखता है तथा आज यह लगभग पूरे विश्व में व्यवहृत होता है। इनके अतिरिक्त चीनी, फारसी, स्पार्टा, यूनानी, नावूसारी, सिकंदरी, मिसरी, मूसवी, दाऊदी, इब्राहिमी आदि कुछ पुराने और नए संवत् भी काल-गणना के निमित्त प्रयुक्त किए गए विश्व के महत्त्वपूर्ण संवत् हैं।

इस प्रकार ही अन्य अनेक संवत् भी समय-समय पर प्रचलित किए गए होंगे जिनमें से अनेकों कुछ समय के बाद ही व्यवहार में नहीं रहने के कारण या अन्य अज्ञात कारणों से विस्मृत कर

4. भारतीय इतिहास कोश (हिजरी संवत्) पृष्ठ-496, हिन्दी-उर्दू कोश (हिजरी) पृष्ठ-496।

दिए गए होंगे इसमें तो कोई संदेह ही नहीं। इतना जरूर है कि यह परम्परा निरन्तर चलती रही और उन्नीसवीं शताब्दी का श्रीमद्दयानन्द संवत् इसके एक अर्वाचीन प्रमाण के रूप में प्राप्त होता है।

श्री दयानन्द सरस्वती की जन्मतिथि विक्रमी सं० 1881 फाल्गुण कृष्ण 10 (16 फरवरी 1825) से इस संवत् का चलन हुआ। विक्रमी सं० 1981 से पूर्व यह संवत् दयानन्दजी की मृत्यु तिथि विक्रमी सं० 1940 कार्तिक कृष्ण 15 से मनाया जाता था। उसके बाद महर्षि दयानन्द का आयु 59 वर्ष मिलाकर इसे 105 कर दिया गया।⁵

बीसवीं शताब्दी में भी संवत् स्थापना का एक प्रमाण है तारक संवत्। तारक संवत् पं० चन्द्रमणि शर्मोपाध्याय द्वारा प्रारम्भ किया गया। प्रकाशित अवस्था में इस संवत् का प्रयोग इनकी पुस्तकों में मिलता है। परन्तु कहीं भी यह संवत् विक्रमी संवत् या ईस्वी संवत् के साथ पूर्ण रूप से उल्लिखित नहीं है अतः इसे किस दिन प्रारम्भ किया गया इसका निर्णय उनकी पुस्तकों में प्राप्त तारक संवत् की तिथियों तथा विक्रमी संवत् की तिथियों के तुलनात्मक अध्ययन के द्वारा ही संभव है।

श्राद्धेन्दौ (तृतीयभागान्तर्गत) पुस्तक की समाप्ति पर पं० चन्द्रमणि शर्मोपाध्याय ने 24-8-12(93)⁶ लिखा है। ताराक्षरविद्या नाम से स्वरचित लिपि के अन्त में ताराक्षरलिपि में ही तारक 9-5-97 लिखा है। गीतावली-सुधार नाम से प्राप्त पाण्डुलिपि में भी तारक 26-4-10⁸ लिखा हुआ है। उपर्युक्त समस्त स्थलों पर विक्रमी संवत् की तिथि का उल्लेख न होने से यह स्पष्ट नहीं किया जा सकता कि तारक संवत् का प्रचलन कब से हुआ।

पं० चन्द्रमणि उपाध्याय की अगली पुस्तक 'सर्वत्रतोद्यापन-चन्द्रिका' के नाम से भाद्रपद कृष्णजन्माष्टमी, संवत् 1996 में प्रकाशित हुई। प्रस्तुत पुस्तक के समाप्ति श्लोकों में तिथि उल्लेख कुछ इस प्रकार से किया गया है-

**चैत्रेमासे सितेपक्षे ह्यष्टम्यां गुरुवासरे।
अब्धिनेत्रप्रविष्टे तु नक्षत्रे पुनर्वसौ ॥
इष्वङ्काङ्कविधौवर्षे स्वकीये तु त्रयोदशे।⁹**

5. हिमसुमन, मई 2007, भारत में प्रचलित संवत् (प्रो० शिव कुमार शाण्डिल्य) 42।

6. श्राद्धेन्दौ (तृतीयभाग), पृष्ठ-124।

7. ताराक्षर-विद्या (प्रति लेखक के पास सुरक्षित) पृष्ठ-8।

8. गीतावली-सुधार (प्रति लेखक के पास सुरक्षित) मुख-पृष्ठ।

9. सर्वत्रतोद्यापन-चन्द्रिका, पृष्ठ-209।

अतः ग्रन्थ समाप्ति की तिथि गुरुवार चैत्रमास के शुक्लपक्ष की अष्टमी तिथि बतलाई गई है तथा संवत् का उल्लेख 1995 हुआ है। स्वयं चालित संवत् 13 बताया गया है।

इसके उपरान्त उनकी एक पुस्तक 'संस्कार-सूर्योदय(तृतीय भाग)' में वंशानुकीर्तनम् के अन्तर्गत एक श्लोक में संवत् का उल्लेख इस प्रकार है-

**माघे सूर्यतिथौखखाध्नयने सोमेसितेदास्रभे।
नैजे नेत्रकुसंख्यके प्रचलिते संवत्सरे तारके।¹⁰**

इसी पृष्ठ पर अर्थबोध हेतु टिप्पणियों के अन्तर्गत विक्रमी संवत् 2000 तथा 19 अपना प्रचालित संवत् है¹¹ - इस प्रकार लिखा है। इन दोनों तिथियों तथा मासों की तुलना करने पर चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की अष्टमी तिथि को संवत् 1995 तथा तारक संवत् 13 है तथा दूसरी तरफ माघ मास, 2000 में यह तारक 19 है। यहाँ विक्रमी संवत् के आधार पर पाँच वर्ष का अन्तर है तथा तारक संवत् के आधार पर 13 और 19 के बीच 6 वर्ष का अन्तर है।

इस तुलनात्मक विवरण से इतना तो स्पष्ट है कि यह संवत् विक्रमी संवत् तथा शक संवत् के आधार पर चैत्र मास से प्रारम्भ नहीं किया गया था। यदि इसे चैत्र मास से प्रारम्भ किया गया होता तो दोनों संवत्तों के मध्य दो स्थलों पर दिखाई पड़ने वाला अन्तर नहीं होता। चैत्र संवत् 1995 में यदि तारक संवत् 13 है तो चैत्र संवत् 2000 में यह 18 होता। तब उपर्युक्त माघ 2000 में भी यह 18 होता जबकि यह 19 है। इनकी एक अन्य पुस्तक 'संस्कार-सूर्योदय(द्वितीय भाग)' में ग्रन्थ समाप्ति पर तारक 20-12-16 तथा विक्रमी 98 लिखा है।¹²

प्रस्तुत सारणी में इन संवत्तों को स्पष्ट रूप में देखा जा सकता है--

श्राद्धेन्दौ (तृतीय भाग)	सर्वव्रतोद्यापनचन्द्रिका	संस्कार-सूर्योदय (द्वितीय भाग)	संस्कार-सूर्योदय (तृतीय भाग)
संवत्-93	संवत् चैत्र-95	संवत्-1998	11-माघ,2000
24-8-12	तारक-13	तारक-20-12-16	तारक-19

10. संस्कार-सूर्योदय: (तृतीयभाग), पृष्ठ-200।

11 संस्कार-सूर्योदय: (तृतीयभाग), पृष्ठ-20।

12 संस्कार-सूर्योदय: (द्वितीयभाग) पृष्ठ-223।

प्रकाशन वर्ष—

नवम्बर, 1937 अर्थात् कार्तिक, 94	भाद्रपद-अष्टमी, 1996	पौष, 1998	21माघ, 2000
--	----------------------	-----------	-------------

सर्वत्रतोद्यापनचन्द्रिका तथा संस्कार-सूर्योदय (तृतीय भाग) के अन्तर से इतना स्पष्ट है कि तारक संवत् का परिवर्तन वैशाख से माघ के बीच ही हुआ क्योंकि 11 माघ संवत् 2000 को तारक 18 न होकर तारक 19 है।

यदि श्राद्धेन्दौ (तृतीय-भाग) तथा संस्कार-सूर्योदय (द्वितीय भाग) पर दृष्टिपात किया जाए तो 24-8-12 का संवत् 1993 है तथा तारक 20-12-16 का संवत् 1998 है। अतः यह स्पष्ट है कि तारक के अन्तिम चार महीनों में ही विक्रमी संवत् परिवर्तित हुआ है क्योंकि 24-8-12 को 1993 से गिनने पर 8-12 तक तो निश्चित रूप से संवत् 1997 ही होगा। संस्कार-सूर्योदय (द्वितीय-भाग) पौष संवत् 1998 में प्रकाशित हुआ। संवत् 1998, 20-12-16 से प्रारम्भ हो चुका है तथा पौष तक 1998 ही है। संस्कार-सूर्योदय(तृतीय-भाग) में 11 माघ, 2000 को तारक 19 होने से इतना अनुमान किया जा सकता है कि पौष 1998 का तारक भी 16 न होकर 17 होगा क्योंकि ग्रन्थ की समाप्ति 1998 में ही 20-12-16 को तारक के अन्तिम मास में हुई है।

सर्वत्रतोद्यापन-चन्द्रिका में चैत्र 95 में तारक 13 है मात्र इतना ही उल्लेख है। इस आधार पर चैत्र 98 में तारक 16 तथा चैत्र 93 में तारक 11 होगा जबकि 1993 में 24-8-12 है, अतः यह स्पष्ट है।

वस्तुतः इन समस्त उद्धरणों में यह कहीं भी स्पष्ट नहीं है कि इस संवत् का आरम्भ कब से माना जाए। यदि स्थापनाकार का लक्ष्य मात्र अपनी कीर्ति का प्रसार करना ही होता तो निश्चित रूप से प्रत्येक पुस्तक में इस संवत् का स्पष्टरूप से उल्लेख होता तथा विद्वान लेखक कालान्तर में यश-लाभ प्राप्त करता परन्तु लेखक के मन में इस प्रकार की कोई कामना नहीं थी।

चैत्र के बाद संवत् स्थापना के मास पर यदि ध्यानपूर्वक विचार किया जाए तो वैशाख मास अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है क्योंकि वैशाख मास ज्योतिष की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है और वैशाख मास की संक्रान्ति में सूर्य का मेष राशि में प्रवेश होता है। मेष राशि ज्योतिष की गणना के अनुसार प्रथम राशि है तथा भारत के बंगाल, दक्षिण भारत, पंजाब तथा नेपाल आदि देशों में प्रथम वैशाख का

बड़ा महत्त्व है। पंजाब व हिमाचल में भी वैशाख मास की संक्रान्ति का बड़ा महत्त्व है तथा सम्पूर्ण मांगलिक कार्यों में प्रविष्टों से ही गणना की जाती है। सौर गणना के अनुसार ये प्रविष्टे संक्रान्तियों से ही आरम्भ होते हैं तथा इनके बारह संक्रान्तियों (महीनों) में विभाजन से 365 दिनों का एक सौरवर्ष बनता है।

अतः क्षेत्रीय सौर-गणना पर विचार करने से यह वैशाख से ही प्रारम्भ होता है क्योंकि चैत्र मास को प्रस्थानी महीना कहकर शुभ कार्यों में वर्जित समझा जाता है। प्रस्थानी का सीधा सम्बन्ध प्रस्थान से है अर्थात् वर्ष का प्रस्थान। राशिचक्र के अनुसार भी चैत्र मास में सूर्य मीन राशि में होता है। प्रस्थानी मास के रूप में सौर गणना पर आधारित चैत्र ही होता है।

संस्थापक को बैजनाथ में स्वामी तारानन्दजी के सान्निध्य में रहने का अवसर प्राप्त हुआ तथा उन्हीं की प्रेरणा से भगवती तारा की असीम अनुकम्पा लेखक को प्राप्त हुई। स्वामी तारानन्दजी की शिक्षा का मूल स्थान बंगाल ही था तथा उन्होंने तन्त्र, दर्शन तथा व्याकरण आदि में पारंगता बंगाल तथा मिथिला क्षेत्र के विद्वानों के सम्पर्क से ही प्राप्त की थी अतः वे वैशाख मास से आरम्भ होने वाले संवत् को विशेष महत्त्व देते रहे होंगे। संभवतः अपनी इष्ट-देवी भगवती तारा के समर्पणार्थ पं० चन्द्रमणि शर्मा ने तारक नामक संवत् की स्थापना करते समय इन बातों का ध्यान भी रखा होगा।

यदि इसकी तिथि को प्रथम वैशाख स्वीकार कर लेने पर इसे किस वर्ष प्रारम्भ किया गया इस सम्बन्ध में कोई भी जटिलता प्रतीत नहीं होती। उपर्युक्त तिथियों के द्वारा ही इसके प्रारम्भिक वर्ष का निर्णय करना सरल हो जाता है।

सर्वाधिक निकट के वर्ष हेतु श्राद्धेन्दौ (तृतीय-भाग) को सामने रखते हुए वैशाख से प्रथम दिन (प्रविष्टे) का निर्धारण करते हुए 1-1-12 का संवत् 1993 होगा। इस प्रकार 1-1-2 का संवत् 1983 होगा तथा 1-1-1 अर्थात् प्रथम वैशाख तारक प्रथम का संवत् 1982 विक्रमी को निर्धारित किया जा सकता है।

संवत् स्थापनाकार लेखक का जन्म ईस्वी सन् 1904 में हुआ तथा संवत् 1982 अर्थात् अप्रैल 1925 में इनके द्वारा संवत् की स्थापना के विचार को मूर्तरूप प्रदान करते हुए तारक संवत् की स्थापना भी कर दी। सम्भवतः पं० चन्द्रमणि शर्मा स्वयं को भगवती तारा की सेवा में समर्पित करके अपने जीवन में एक नवीन दृष्टिकोण को अपनाने की स्मृति में ही इस नवीन संवत् की स्थापना की गई हो।

कुछ भी हो, बीसवीं शताब्दी में उनके द्वारा किया गया यह महान् कार्य निश्चित रूप से ही बैजनाथ क्षेत्र के ऐतिहासिक गौरव को बढ़ाने वाला है। यदि स्थापनाकार के भाद्रपद कृष्णपक्ष की

नवमी संवत् 2002 अर्थात् अगस्त 1945 में अल्पायु में ही इस नश्वर शरीर का त्याग न हुआ होता तो संभवतः उनके इस अनुपम कृत्य का जनसमुदाय के बीच कुछ दूसरा ही रूप होता।

सन्दर्भग्रन्थ-सूची-

1. भारतीय-इतिहास कोश — उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, ६ महात्मा गाँधी मार्ग, लखनऊ।
2. उर्दू-हिन्दी कोश — (संकलनकर्ता-मुहम्मद मुस्तफ़ा खाँ 'मद्दाह'), नवम संस्करण, उत्तर- प्रदेश हिन्दी संस्थान, ६ महात्मा गाँधी मार्ग, लखनऊ -२००१।
3. शाण्डिल्य, प्रो० शिव कुमार का लेख—“भारत में प्रचलित संवत” हिमसुमन, काँगड़ा सांस्कृतिक परिषद् धर्मशाला से प्रकाशित, मई-२००७।
4. ताराक्षरविद्या (अप्रकाशित)— मूलप्रति लेखक के पास सुरक्षित।
5. गीतावलीसुधार (अप्रकाशित)— मूलप्रति लेखक के पास सुरक्षित।
6. सर्वव्रतोद्यापन चन्द्रिका— पं० चन्द्रमणि उपाध्याय, प्रकाशक- पद्मनाभजी शर्मा, बैजनाथ, प्रथमावृत्ति, संवत्-१९९६।
7. संस्कार-सूर्योदय (तृतीय भाग)— पं० चन्द्रमणि उपाध्याय, प्रकाशक- पद्मनाभजी शर्मा, मुद्रकः लक्ष्मी आर्टप्रेस, धर्मशाला, काँगड़ा, द्वितीयावृत्ति, संवत्-२०००।